तर्ज- टुकड़े हैं मेरे दिल के

बैठे हो जहाँ पर तुम तेरे पास तेरी रूहें
माशूक मेरे देखो क्यूं उदास तेरी रूहें

1- कदमों में पड़े हैं पर बातें न हो सकती हैं
आंखें तो खुली हैं पर दीदार को तरसी हैं
इस दर्द में घिर कर के लाचार तेरी रूहें

2- नजरों में पिया जी ये नजरें तो जरा डालो
दिल में यूं उतर करके दूरी तो मिटा डालो
मांगे तो फकत मांगे ये मेहर ही तेरी रूहें

3-कोई आस अगर है तो वो आस दर्श की है
कोई प्यास अगर है तो वो प्यास अर्श की है
करती है ख़ताओं का इज़हार तेरी रूहें

Nijanand App